Nav Jyoti, Vol. 6, No. 12, January-June 2018 ISSN : 2249-7331

ब्रिटिश सरकार की रक्षानीति : भारत के विशेष सन्दर्भ में

डॉ० रामकृष्ण सिंह

एसो० प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, श्री गणेश राय पी.जी. कालेज डोभी, जौनपुर

सारांश :

प्रस्तुत शोध लेख में ब्रिटिश कालीन रक्षा नीति भारत के विशेष संदर्भ में विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। रक्षा नीति का क्या आशय है? कैसे किसी देश की विदेश एवं रक्षा नीति देश के हितों की सुरक्षा करती है? ब्रिटिश काल में कैसे भारतीय रक्षा नीति का विकास हुआ? तथा भारत की स्वतंत्रता के पूर्व ब्रिटिश कालीन रक्षा नीति के मुख्यतः तीन उद्देश्य थे– प्रथम उद्देश्य के अन्तर्गत ब्रिटिश साम्राज्य ने अपने व्यापारिक हितों को विस्तृत करने तथा उनको सुरक्षित करने का प्रयास किया तथा द्वितीय उद्देश्य के अन्तर्गत ब्रिटिश साम्राज्य अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में अपनी सुरक्षा के लिए तत्पर था। तृतीय उद्देश्य के अन्तर्गत ब्रिटेन अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने का प्रयास कर रहा था। इन उद्देश्यों को प्राप्त करते समय ब्रिटेन और भारत के सुरक्षा हित उस समय समान थे, जो दीर्घकालिक भारतीय हितों की सुरक्षा करने में सक्षम थे। स्वतंत्रता के पूर्व ब्रिटिश कालीन रक्षानीति में इन्हीं बिन्दुओं को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : रक्षानीति, आन्तरिक परिधि, वाह्य परिधि, शक्ति विन्यास, शक्ति सन्तुलन।

प्रस्तावना :

किसी भी राष्ट्र की रक्षानीति का मुख्य ध्येय व कार्य अपने राष्ट्र को उस स्तर की शक्ति प्रदान करना होता है, जिसके प्रयोग या प्रयोग करने का भय दिखाकर वह राष्ट्र किसी दूसरे राष्ट्र के व्यवहारों व कार्यों को अपने राष्ट्र के हित को ध्यान में रखते हुए दिशा प्रदान करता है या प्रभावित करता है। कोई भी राष्ट्र अपनी रक्षा योजना भविष्य में सम्भावित खतरों को ध्यान में रखकर निर्धारित करता है। राष्ट्र हित पर होने वाले सम्भावित खतरों के आधार पर राष्ट्र अपनी रक्षा जरूरतों की पूर्ति करता है और इसी आधार पर अपनी सेना को तैयार करता है। अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि किसी भी राष्ट्र की रक्षा व विदेशनीति तत्कालीन व भविष्य में उत्पन्न होने वाले क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वैज्ञानिक तौर पर किये गये विश्लेषण पर आधारित होती है। किसी भी राष्ट्र की रक्षा नीति का प्रतिपादन करते समय ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

अध्ययन का उद्देश्य :

इसके अध्ययन का उद्देश्य मुख्य रूप ब्रिटिश कालीन रक्षानीति (भारत के विशेष सन्दर्भ में) को विश्लेषित करने का प्रयास है। इस नीति के क्या निहितार्थ थे? ब्रिटेन ने क्यों इस तरह की नीति का निर्धारण किया? ब्रिटेन के हितों की सुरक्षा के साथ कैसे भारत के हित अप्रत्यक्ष रूप से सुरक्षित हुए? यह नीति भारत की सुरक्षा का कैसे आधार थी? वे कौन–कौन से खतरे थे? जिसके कारण ब्रिटेन को भारतीय हितों की सुरक्षा के लिए विवश होना पड़ा।

ब्रिटिश रक्षा नीति के आधार :

सर्वप्रथम ब्रिटिश सरकार ने भारत की रक्षा समस्याओं का विस्तृत अध्ययन करके रक्षा नीति का निर्धारण किया तथा इस नीति को आधार बनाकर अपनी विदेशनीति निर्धारित की। ब्रिटिश सरकार की रक्षा व विदेशनीति स्वयं के हितों की सुरक्षा के साथ–साथ भारत व भारत की जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए बनायी गयी थी। ऐसा इसलिए किया गया था क्योंकि उस समय भारत के हित की रक्षा

करना ही ब्रिटेन के हित में था। दोनों के हितों का आपस में एक दूसरे पर निर्भर होने के कारण ही सम्भवतः ब्रिटिश सरकार ने एक विस्तृत रक्षा व विदेशनीति का निर्धारण किया। यदि हम स्वतन्त्रता के पहले की रक्षा नीति का मूल्यांकन करें तो हम देखेंगे कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के तीन मुख्य लक्ष्य थे।

1. अपने व्यापार को और विस्तृत करना।
2. अपने साम्राज्य की सुरक्षा।
3. अपनी आर्थिक क्षमता को सुदृढ़ आधार प्रदान करना।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले ब्रिटेन Core (क्रोड) की भूमिका में था तथा सम्पूर्ण भारत उपांत या परिधि के रूप में था। यहाँ की सभी आर्थिक गतिविधियाँ ब्रिटेन द्वारा संचालित एवं क्रियान्वित होती थी। कच्चा माल (महत्वपूर्ण कृषि उपजे जैसे चाय) महत्वपूर्ण खनिज जैसे लौह अयस्क ब्रिटेन जाते थे और वहाँ से फिर तैयार माल उपांत क्षेत्र भारत में आपूर्ति होता था। एशियन ड्रामा में गुन्नार मिरडल ने इस तथ्य की ओर संकेत किया है कि क्रोड (ब्रिटेन) अपने आर्थिक हितों की सुरक्षा के लिए अपने स्तर से नियम कानून बनाता है और दूसरी तरफ उपांत (भारत) को उसकी नीतियों पर चलने के लिए बाध्य होना पड़ता है। Have और Have Not शोषक एवं शोषित दो तरह के परिदृश्य इन परिस्थितियों में बनते हैं। चूँकि उपनौवेशिक भारत में क्रोड की भूमिका में ब्रिटेन था, जिससे वह दिनानुदिन आर्थिक, व्यापारिक एवं सैनिक रूप से सबल होता गया, जबकि तात्कालीन उपांत (भारत) शोषित, कमजोर और निर्बल होता गया। इन नीतियों के कारण ब्रिटेन भारत को सुरक्षात्मक आधार तो प्रदान किया लेकिन अपने हितों को ध्यान में रखकर। इस काल में ब्रिटेन की नीति मुख्यतः 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' के सिद्धान्त पर चलती रही। ब्रिटेन की नीति एक मात्र उद्देश्य अपने दीर्घकालिक हितों की सुरक्षा थी, जिसमें भारत का हित समाहित था।

इन्हीं मुख्य हितों को ध्यान में रखते हुए ब्रिटिश सरकार ने भारत की रक्षा एवं विदेशनीति का निर्धारण किया। भारत की रक्षानीति भारतीय साम्राज्य के साथ लगे छोटे–छोटे राज्यों को नियंत्रित करने और सीमा भूमि तटस्थीकरण अथवा अखण्डता को बनाये रखने इत्यादि तथ्यों पर आधारित थी। वह पद्धति जिससे इन लक्ष्यों की प्राप्ति हो सकती थी, चक्राकार आड़ (Ring Fence) के नाम से जानी जाती है, इसके अन्तर्गत दो या दो से अधिक सहकेन्द्रित परिधियाँ थी, आन्तरिक एवं वाह्य परिधि।

आन्तरिक परिधि :

आन्तरिक परिधि हिमालयवर्ती राज्यों नेपाल, भूटान, सिक्किम और उत्तर में जनजातीय क्षेत्र और उत्तर–पूर्व में आसाम और उत्तरी पश्चिमी सीमा से बनी थी।

वाह्य परिधि :

वाह्य परिधि फारस की खाड़ी, अफगानिस्तान और थाईलैण्ड से बनी थी, धीरे–धीरे नियंत्रण के विविध तरीकों द्वारा आन्तरिक परिधि की स्थापना की गई, जबकि धमकी अथवा शक्ति प्रयोग की तीव्र कूटनीतिक गतिविधियों के द्वारा किसी बड़ी शक्ति को बिना प्रतिकारी लाभ पहुँचाए वाह्य परिधि के किसी भी बफर राज्य में पैर जमाने से रोके रखा।

दो विनाशकारी युद्धों सहित बड़ी शक्तियों के मध्य तीव्र प्रतिस्पर्द्धा थी। एक शताब्दी के दौरान चक्राकार आड़ (Ring Fence) अपनी सफलता को बनाये हुए थी इसकी सफलता के कई और कारण हो सकते हैं। बड़ी शक्तियों की प्रतिस्पर्द्धा में ब्रिटेन द्वारा शक्ति सन्तुलन का चतुराई से परिचालन और हिन्द महासागर में ब्रिटानी नौ सेना का प्रभुत्व भारत के लिए किसी भी गम्भीर खतरे की सम्भावना को कम कर देता है।[1] इस प्रकार चक्राकार आड़ (Ring Fence) की नीति के कारण भारतीय सुरक्षा के लिए कभी कोई गम्भीर खतरा उत्पन्न नहीं हो सका।

भारतीय जनता की विविधता, आन्तरिक सुरक्षा के लिए स्थाई खतरा उत्पन्न करती थी। उत्तर–पश्चिम और उत्तर–पूर्व में अर्द्ध विकसित तथा लड़ाकू जनजाति का बस जाना भारत की शांतिप्रियता तथा सुरक्षा के लिए एक स्थाई खतरा थे। उत्तरी पश्चिमी सीमा पर जनजाति समस्या, अफगानिस्तान में शक्ति विन्यास और उस राष्ट्र के नेताओं का ब्रिटिश शासन के प्रति दृष्टिकोण से जुड़ी हुई थी। भारत पर आक्रमण करने पर परम्परागत मार्ग पर अफगानिस्तान की स्थिति का स्त्रातेजिक महत्व था और स्वतंत्र राज्य के रूप में उसका अस्तित्व भारतीय सुरक्षा के लिए काफी महत्वपूर्ण था। इसी प्रकार उत्तरी–पश्चिमी सीमा पर धर्मान्ध जनजातियों की शत्रुता की पुनरावृत्ति होना और अफगानिस्तान तथा रूस के द्वारा शत्रुतापूर्ण कार्यवाही की सम्भावना ब्रिटिश भारत की रक्षानीति निर्धारकों को भी चिन्ता का प्रमुख कारण था। इसीलिए लार्ड कर्जन ने 1901 में उत्तरी पश्चिम सीमा प्रान्त की स्थापना की। इसके अतिरिक्त यहाँ पर अत्यधिक खर्चीला सुरक्षात्मक प्रबन्ध किया गया, जिसके अन्तर्गत सीमा पर दुर्गों का निर्माण करवाया गया। सैनिक केन्द्रीयकरण की नीति वहाँ के बर्बर जातियों को नियंत्रित करने के लिए की गई थी। इस सीमा प्रान्त में रेलवे लाइनों का निर्माण तथा अन्य सुविधायें प्रदान करने का उद्देश्य अफगानिस्तान में रूस की नवीनतम गतिविधियों को रोकना था। नवम्बर, 1903 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में 'साम्राज्यवादी रक्षा सीमिति' का गठन किया गया, जिसका अध्यक्ष ब्रिटिश प्रधानमंत्री को बनाया गया। नागेन्द्र सिंह के अनुसार इस समिति को ब्रिटिश साम्राज्य के उच्चतर रक्षा नीति के निर्धारण हेतु एक कोपल युक्त अंग के रूप में निरूपित किया जा सकता है।[2]

नेपोलियन के प्रादुर्भाव के समय दक्षिण–पूर्व एशिया के डच उपनिवेशों तथा व्यापारिक प्रतिष्ठानों पर फ्रांस ने अधिकार कर लिया, परिणाम स्वरूप ब्रिटिश सरकार ने आगामी संकट के भय से दक्षिण–पूर्व एशिया में जावा तथा अन्य देशों को सैनिक शक्ति द्वारा अपने अधिकार में कर लिया था। यूरोप में शांति के परिणाम स्वरूप जावा के पड़ोसी देशों को डच सरकार को दे दिया गया; परन्तु ब्रिटिश सरकार ने मलाया के ऊपर अपना अधिकार बनाये रखा जो शीघ्र ही उनके साम्राज्य का सुदृढ़ अंग बन गया। सिंगापुर का व्यापारिक तथा सैनिक अड्डे के रूप में विकास हुआ, जिसके परिणाम स्वरूप ब्रिटिश भारत की सुरक्षात्मक स्थिति और भी सुदृढ़ हो गयी। बर्मा के कारण पूर्वी सीमा पर संकट उत्पन्न हो गया था, जिससे विवश होकर ब्रिटिश सरकार को बर्मा नीति अपनानी पड़ी, जिसके अन्तर्गत बर्मा को ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य में मिलाना आवश्यक हो गया, ये इसलिए भी आवश्यक था कि बर्मा के समुद्र तट पर किसी भी हालत में फ्रांस का अधिकार न हो सके। 19वीं शताब्दी के प्रथम 25 वर्षों में वर्मा की सम्पूर्ण समुद्री सीमा चटगाँव से लेकर विक्टोरिया तक ब्रिटिश साम्राज्य में मिला दी गयी। इस प्रकार हिन्द महासागर में बंगाल की खाड़ी का सम्पूर्ण पूर्वी क्षेत्र ब्रिटिश सरकार के अन्तर्गत आ गया। इस प्रकार से हिन्द महासागर की ओर से उत्तरी–पश्चिमी तथा उत्तर–पूर्वी भाग सैनिक दृष्टि से पूर्ण रूप से सुरक्षित हो गया। इस प्रकार से हिन्द महासागर की लम्बी तटीय रेखा अंग्रेजों के अधिकार में आ गई। हिन्द महासागर की सुरक्षा तथा ब्रिटिश भारत की भूमिका के लिए दक्षिण अफ्रीका के क्षेत्र 'केप आफ गुडहोप' पर ब्रिटेन ने सशस्त्र अधिकार कर लिया तथा पश्चिमी देशों से कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित किये जो पूर्वी अफ्रीका के तटीय क्षेत्रों पर नियंत्रण रखते थे। इस समय ब्रिटेन ने अदन पर अपना पूर्ण नियंत्रण रखा, जिससे लाल सागर की ओर से हिन्द महासागर में प्रवेश को रोका जा सके। ब्रिटिश सरकार ने खाड़ी क्षेत्र में स्थिति स्थानीय राजाओं से भी सम्बन्ध स्थापित किया, इस प्रकार बर्मा, मलाया, जावा, श्रीलंका तथा अफ्रीका के तटीय देशों तथा खाड़ी देशों में हस्तक्षेप करने का मुख्य उद्देश्य भारतीय सीमा की सुरक्षा करना था। ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नौ सेना को भी इस क्षेत्र से तैयार किया। खाड़ी के पश्चिमी भाग और अरब सागर पर अधिकार करने का मुख्य उद्देश्य व्यापार की प्रगति को तीव्र करना था। सुदूर पूर्वी देशों पर अधिकार करने का उद्देश्य भारत तथा अन्य शक्तियों से आपसी सम्बन्ध स्थापित करना था। सामान्य रूप से सुरक्षा परिधिनीति का उद्देश्य भारत की सुरक्षा, भारतीय समुद्र की रक्षा, समुद्री संचार व्यवस्था की सुरक्षा तथा शक्तिशाली शस्त्रुओं से भारत को बहुत दूर रखना था। इस प्रकार एक तरह से 1 नवम्बर 1858 से 14 अगस्त 1947 के युग में (ब्रिटिश शासन के अधीन) भारत की जनता ने अपने को वाह्य आक्रमणों एवं आन्तरिक अशांति से पूर्ण रूप से सुरक्षित पाया। ए०एल० बैंकटेश्वरन के शब्दों में "भारत के संदर्भ में सन् 1857 का विद्रोह दृढ़ सैनिक नीति का आरम्भिक बिन्दु था।"[3] इसके

परिणामस्वरूप ब्रिटेन अपने तात्कालिक एवं दीर्घकालिक हिता की सुरक्षा के लिए निरंतर तत्पर रहा और लम्बे समय तक इस क्षेत्र पर नियंत्रण बनाये रखा।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हमारा दृष्टिकोण ब्रिटिश सरकार के प्रति कुछ भी क्यों न हो हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं होता कि शताब्दियों से भारत पर होने वाले वाह्य आक्रमणों से पहली बार सुदृढ़ सुरक्षा प्राप्त हुई जो शताब्दियों तक यथावत बनी रही। आज के बदलते अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भी अपने दीर्घकालिक हितों की सुरक्षा का अपना विशेष महत्व है। किसी भी देश के लिए अपनी रक्षा नीति का निर्धारण करते समय अपनी भौगोलिक अवस्थिति अन्य देशों के साथ उसके आर्थिक एवं राजनीतिक सम्बन्धों को ध्यान देने की जरूरत है। इसके आधार पर उसको अपने आर्थिक एवं सैनिक ढ़ांचे का निर्माण करना चाहिए। अपने देश की रक्षा नीति का निर्धारण करते समय देश की वैज्ञानिक तकनीकी, आर्थिक क्षमता तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को ध्यान में रखना चाहिए।

संदर्भ :

1. L.J. Kavik : India's Quest for security, P.9.

2. Nagendra Singh : The Defence Mechanism of Modern State, P.76

3. A.L. Venketewaran : Defence organisation of India, P.4.